International Journal of Applied Research 2019; 5(11): 271-275

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2019; 5(11): 271-275
www.allresearchjournal.com
Received: 19-08-2019
Accepted: 12-10-2019

Dr. Sima Kumari
Designation - 10+2 Teacher,
Department Geography,
School - High School (10+2),
Paliganj, Patna, Bihar, India

Corresponding Author:
Dr. Sima Kumari
Designation - 10+2 Teacher,
Department Geography,
School - High School (10+2),
Paliganj, Patna, Bihar, India

राजगीर क्षेत्र का भौगोलिक पर्यटन एवं स्वरूप : एक अध्ययन

Dr. Sima Kumari

सारांश

पर्यटन क्षेत्रों के विकास में भौगोलिक स्वरूप का विशेष योगदान रहता है तथा बहुत से पर्यटन केंद्र अपने भौगोलिक विशेषता के कारण वहीं बहुत से अपनी सांस्कृतिक विरासत के कारण जबकि ऐतिहासिक, धार्मिक एवं अन्य प्रकार के पर्यटन स्थल अपनी सांस्कृतिक विलक्षणता एवं महत्ता के फल स्वरुप ही विकसित होते हैं। [1] राजगीर क्षेत्र में पर्यटन क्षेत्रों की भौगोलिक स्वरूप का अध्ययन करने की दृष्टि से राजगीर के भौतिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं का विस्तृत विश्लेषण करना अति आवश्यक है अतः इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु इस अध्ययन में राजगीर क्षेत्र में पर्यटन स्थलों के सांस्कृतिक स्वरूप तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को आधार मानते हुए विश्लेषण किया गया है।

मूल शब्द: राजगीर, बौद्ध स्थल, मलमास मेला, नालंदा, विश्व शांति स्तूप, रोप-वे, गृद्धकूट पर्वत।

प्रस्तावना

पर्यटन भूगोल, भूगोल की एक नवोदित शाखा है जिस का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है वर्तमान में पर्यटन को न केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है बल्कि इसमें संस्कृतिक मेल मिलाप अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना मैत्री तथा पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य समाहित है। राजगीर क्षेत्र में स्थित सांस्कृतिक धरोहर महत्व के स्थल, पौराणिक महत्व की धरोहर स्थल तथा पर्यटन विकास के लिए पर्याप्त संभावनाएं उपलब्ध है, यही कारण है कि राजगीर क्षेत्र में भौगोलिक स्वरूप एवं पर्यटन विषय पर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राजगीर क्षेत्र में सांस्कृतिक तथा पौराणिक विरासत के पर्यटन स्थलों का विश्लेषण करना है प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है -

- राजगीर में पर्यटन विकास में सहायक भौगोलिक केंद्रों का विश्लेषण करना।
- राजगीर के प्रसिद्ध मलमास मेले का भौगोलिक अध्ययन करना।

अध्ययन उद्देश्य

अध्ययन क्षेत्र : अध्ययन क्षेत्र राजगीर बिहार का एक छोटा सा शहर है जो नालंदा जिले में स्थित है। इसे मगध राज्य की राजधानी बनने का गौरव प्राप्त है । [6] इस क्षेत्र की तुलना एक टापू से भी की जाती है क्योंकि यह शहर पहाड़ियों तथा घने जंगलों के मध्य में बिहार की राजधानी पटना से 100 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र की जनसंख्या 41619 है । [2] 25.03° उत्तरी अक्षांश से 85.42° पूर्वी देशांतर के मध्य 73 मीटर समुद्र तल से ऊंचाई पर स्थित है ।

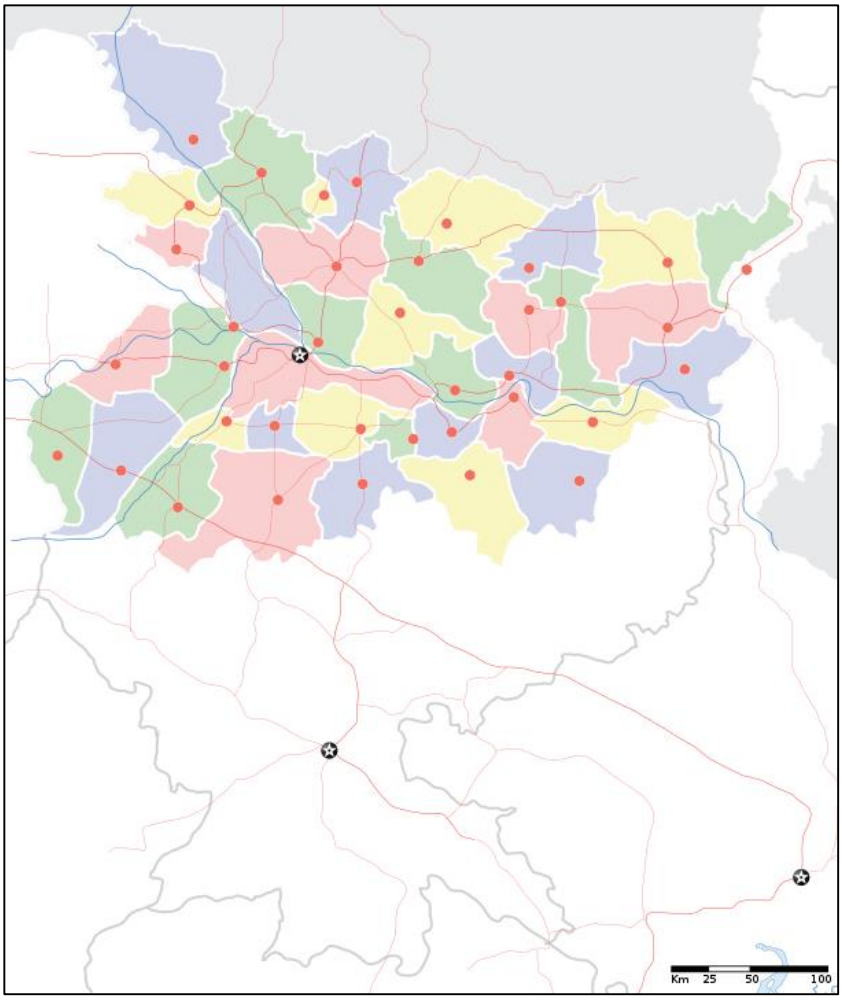

चित्र 1: राजगीर क्षेत्र का मानचित्र

पर्यटन के प्रमुख केंद्र राजगीर में आवागमन हेतु उपलब्ध परिवहन मार्ग

यातायात की दृष्टि से राजगीर क्षेत्र की स्थिति केंद्रीय है यह देश के अन्य भागों से सड़क रेल तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है।

वायु मार्ग - वायु मार्ग से राजगीर पहुंचने के लिए पटना अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा है जो कि राजगीर से 99.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसके अलावा यहां पहुंचने के लिए गया अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का भी उपयोग किया जा सकता है जो कि 75.2 किलोमीटर दूर है ।

रेल मार्ग - बिहार राज्य में स्थित राजगीर शहर में रेल मार्ग द्वारा राजगीर रेलवे स्टेशन तक पहुंचा जा सकता है यह रेलवे स्टेशन पटना जंक्शन, हरनौत, जहानाबाद, बिहार शरीफ, गया जंक्शन, इस्लामपुर, नवादा तथा बख्तियारपुर जंक्शन से जुड़ा है यह रेलवे

स्टेशन जवाहर नवोदय विद्यालय राजगीर नालंदा के समीप स्थित है। राजगीर रेलवे स्टेशन दानापुर रेलवे डिवीजन के ईस्ट सेंट्रल रेलवे जोन में आता है।

सड़क मार्ग - बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित टूरिस्ट बसों अथवा टैक्सी सेवाओं के द्वारा भी राजगीर पहुंचा जा सकता है। राष्ट्रीय राजमार्ग 82 राजगीर से ही होकर गुजरता है।

राजगीर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विरासत

राजगीर की ऐतिहासिक धरती, जैन तथा बौद्ध धर्म के पर्यटन स्थलों का प्रमुख केंद्र रही है। राजगीर का भौगोलिक महत्व होने के अलावा ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व भी है। विभिन्न धार्मिक ग्रंथो में भी राजगीर का वर्णन देखने को मिलता है -

पौराणिक साहित्य के अनुसार -

पुराणों के अध्ययन में राजगीर को भगवान ब्रह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि तथा संस्कृति का केंद्र बताया गया है।

वेदों के अनुसार -

भगवान बुद्ध की तपस्थली राजगीर को ही बताया गया है जिसके अन्तर्गत राजगीर के इतिहास का वर्णन ऋग्वेद , अथर्ववेद वायु पुराण, महाभारत, रामायण आदि ग्रंथों में भी किया गया है

जैन ग्रंथ विविध तीर्थकल्प के अनुसार

राजगीर जरासंध, श्रेणिक, बिंबिसार, कनक जैसे प्रसिद्ध राजाओं का निवास स्थान रहा है। इसी क्षेत्र में जरासंध द्वारा भगवान श्री कृष्ण को हराकर मथुरा से द्वारिका जाने को विवश होना पड़ा था।

राजगीर का सांस्कृतिक स्वरूप एवं पर्यटन - राजगीर अपनी ऐतिहासिक तथा भौगोलिक पर्यटन क्षमता के कारण अंतर्राष्ट्रीय पटल पर एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में उभर रहा है। यहां स्थित ऐतिहासिक स्थल पर्यटकों के आकर्षण के प्रमुख केंद्र हैं।

यहाँ से समस्त विश्व को सत्य अंहिसा, करूणा, मैत्री, सह-अस्तित्व, एवं जीवन के अनेक अनुकरणीय आर्दशों की प्रेरणा मिलती है। कई पावन स्थली यथा भगवान महावीर एवं सिक्खों के दसवें गुरू श्री गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज की जन्मभूमि तथा भगवान बुद्ध, सूफी संत हजरत मखदूम कमानुउदीन अहमद याहिया मनेरी की तपोभूमि आदि पुरातात्विक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं समृद्ध स्थल तथा सांस्कृतिक विरासतें समस्त विश्व को इस पर्यटन स्थल की ओर आकर्षित कर रही है।

विश्व शांति स्तूप: रत्नागिरि पर्वत पर विश्व शांति स्तूप के निर्माण की योजना जापान बौद्ध संघ के अध्यक्ष पूज्य गुरू जी भिक्षु निचिदात्सु फूजी की है। 1969 में निर्मित स्तूप की ऊँचाई 120 फीट एवं स्तूप का व्यास 103 फीट है। स्तूप के चारो ओर चार बुद्ध प्रतिमाएं है, जो अत्यन्त भव्य और आकर्षक हैं। यहाँ जापान बौद्ध संघ के सहयोग से प्रत्येक वर्ष समारोह का आयोजन किया जाता है। जिसमें गणमान्य व्यक्तियों के अलावा बड़ी संख्या में विदेशी बौद्ध भिक्षु भी भाग लेते हैं। [4]

आकाशीय रज्जू मार्ग (रोप-वे)- आकाशीय रज्जू मार्ग की स्थापना शांति स्तूप तक जाने के लिये जापान सरकार के सहयोग से 1969 ई0 में की गयी थी। इसकी लम्बाई लगभग 2200 फीट है। इसमे 11 टावर तथा 101 कुर्सियाँ हैं।

गृद्धकूट पर्वत - राजगीर का यह पर्यटन स्थल भगवान बुद्ध के महत्वपूर्ण उपदेशों से जुड़ा है । यहां स्थित एक विशाल शांति स्तूप जिसका निर्माण जापान बुद्ध संघ द्वारा करवाया गया था । [3]

दिगंबर जैन मंदिर - में भगवान महावीर की श्वेत वर्ण पद्मासन प्रतिमा है। यह स्थल जैन धर्मावलंबियों के ठहरने का प्रमुख स्थान है जहां भारत के कोने कोने से

आने वाले तीर्थयात्री ठहरते है।

विपुलाचल पर्वत - जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की प्रथम वाणी का मूल स्रोत राजगीर क्षेत्र में अवस्थित विपुलाचल पर्वत को माना गया है । यह स्थल जैन धर्म के अनुयायियों के लिए काफी महत्वपूर्ण है।

बिम्बिसार का बंदी ग्रह - अपनी पौराणिक गाथा के फल स्वरुप पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। इस स्थान से गृद्धकूट पहाड़ी को भी देखा जा सकता है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार भगवान बुद्ध के एक कट्टर अनुयाई बिम्बिसार को उसके बेटे अजातशत्रु द्वारा कैद कर लिया गया था।

सप्तपर्णी गुफा - सप्तपर्णी गुफा में स्थित एक पवित्र कुंड है जिसकी धार्मिक मान्यता भी है अतः कुछ सूत्रों के अनुसार प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन इसी स्थान पर माना गया है।

राजगीर वन्यजीव अभ्यारण्य - प्राकृतिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र राजगीर वन्यजीव अभ्यारण्य पांच पहाड़ियों (रत्नागिरी, विपुलाचल,वैभवगिरी, सोनगिरी उदयगिरि) से घिरा प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण तथा जैव विविधता को अपने में समेटे हुए राजगीर का एकमात्र वन्य जीव संरक्षण स्थल है। राजगीर अभयारण्य में वनस्पति और वन्य प्राणियों तथा औषधीय पौधों की कई किस्मे पाई जाती है।

वीरायतन - वीरायतन राजगीर मुख्य मार्ग एन॰एच॰ 82 से 2 कि॰मी॰ पश्चिम दिशा में जैन धर्म से संबंधित एक महत्वपूर्ण आश्रम है जो वैभवगिरि पहाड़ी के निचले भाग में अवस्थित है।[5]

राजगीर का प्रसिद्ध मलमास मेला - राजगीर क्षेत्र का मलमास मेला राजगीर की पहचान के रूप में उभरता जा रहा है। यह मेला आसपास के जिलों में आयोजित मेलों में सबसे बड़ा माना गया है । प्राचीन मान्यताओं के अनुसार प्रति 3 वर्ष के अंतराल पर 1 महीने तक चलने वाले इस मेले में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास माना गया है। एक अन्य मान्यता अनुसार 1 महीने तक चलने वाले इस मेले के दौरान आसमान में कोई नजर नहीं आते हैं। भगवान ब्रह्मा जी द्वारा यहां 22 कुंड तथा 52 जलधारा के निर्माण संबंधी किंवदंतिया उपस्थित है। इस क्षेत्र में हिंदू जैन तथा बौद्ध तीनों धार्मिक स्थल है भगवान बुद्ध कई वर्षों तक यहां तेरे थे तथा उनके कई उपरी यही लिपिबद्घ किए गए हैं।

पर्यटन विकास हेतु सुझाव - पर्यटन आमदनी तथा रोजगार की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा उद्योग बनता जा रहा है। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ वर्षों पश्चात तक भी पर्यटन कि विकास की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया गया इस क्षेत्र के लिए पहली बार दूसरी पंचवर्षीय योजना में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया।

पर्यटन वह उद्योग है जो अर्थशास्त्र के नियमों से एवं वाणिज्यिक गतिविधियों से अत्यधिक प्रभावित हुआ है जब भी कोई पर्यटक किसी गंतव्य तक जाता है तो धन का व्यय होता है यह धन उस क्षेत्र के निवासियों की आय के रूप में परिवर्तित होता रहता है।

पर्यटन विकास का सुव्यवस्थित ढंग से क्रियान्वयन होना चाहिए।

प्रशासन के साथ-साथ स्थानीय लोगों का सहयोग भी पर्यटन विकास और पर्यटन उद्योग को विकसित करने की बेहद आवश्यक होता है अतः पर्यटन विकास के कार्यक्रमों में जन भागीदारी को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

पर्यटन उद्योग के विकास में सरकारी प्रशासन के ध्यान की अति आवश्यकता है।

पर्यटन विकास के लिए परिवहन व्यवस्था को अधिक सुगम बनाये जाने की आवश्यकता है।

पर्यटन के लिए उपयोग की जाने वाली खाद्य सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने के के प्रयत्न किए

जाने चाहिए इस हेतु व्यापक रणनीति तथा पर्यटन पर योजनाओं को शामिल किया जाना सम्मिलित है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजगीर क्षेत्र में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं उपलब्ध है अतः इस क्षेत्र में पर्यटन विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि से जनभागीदारी के साथ-साथ प्रशासन की जिम्मेदारी को तय किया जाना आवश्यक है। साथ ही पर्यटकों की सुविधा की दृष्टि से राजगीर क्षेत्र में यातायात को विकसित करने की भी अति आवश्यकता है। इस क्षेत्र के पर्यटन स्थल अपनी बेजोड़ सांस्कृतिक विरासतों को विश्व पटल पर उभारने का कार्य करते है जहाँ एक ओर धार्मिक महत्व के स्थल मौजूद है वही दूसरी ओर प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक महत्व के स्थल राजगीर को अन्य पर्यटन क्षेत्रो से भिन्न बनाते है अतः इन क्षेत्रो के विकास की सम्भावनाये तलाशने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. सिंह बी-पी- मध्यप्रदेश में पर्यटन विकास, आशा पब्लिकेशन कं 2012, पृ- 36
2. जिला सांख्यिकी पुस्तिका नालंदा 2011.
3. Dallen Timothy, Daniel Olsen. Tourism, Religion and Spiritual Journeys. 12 Buddhism, tourism and the middle way, 2006, 172.
4. Ādivāsī. India: Bihar State Public Relations Department, 1965, 28.
5. Kurt Titze, Klaus Bruhn. Jainism: A Pictorial Guide to the Religion of Non-violence 1998, 216.
6. Dr Malti Malik. History of India, New Saraswati House India Pvt Ltd 2016, 50.